



जिन स्तोत्र एवं स्तवनाओं में नाम निक्षेप की महिमा

नामे हो प्रभु नामे अद्भुत रंग... (देवचंद्र चौधरी-24/6)

हे प्रभु! आपके नाम श्रवण, स्मरण मात्र से भी अद्भुत आनंद प्राप्त होता है।

नाम सुणतां मन उल्लसे रे, लोयण विकसित होय।

रोमांचित हुए देहडी रे, जाणे मीलियो सोय रे॥

पंचम काले पामवो रे, दुर्लभ तुज देदार।

तो पण तारा नामनो रे, छे मोटो आधार॥

हे परमात्मा! आपका नाम सूनते ही मेरा मन उल्लसित होता है,

मेरे नयन विकसित होते हैं,

मानो आप स्वयं ही मिले हो, ऐसा जानकर मेरा देह रोमांचित हो जाता है।

इस पंचमकाल में आपका साक्षात् दर्शन दुर्लभ है,

फिर भी आपके नाम स्मरण का मुझे बहुत बड़ा आधार है।

आस्तामचिन्त्यमहिमा जिनः संस्तवस्ते।

नामाऽपि पाति भवतो भवतो जगन्ति॥ (कल्याणमंदिर-7)

हे जिनेश्वर देव! अचिन्त्य महिमावाली आपकी स्तुति तो दूर रहे,

परन्तु आपका नाम भी तीन लोक का संसार से रक्षण करता है।

त्वन्नाममंत्रमनिशं मनुजाः स्मरन्तः,

सद्यः स्वयं विगतबन्धभया भवन्ति। (भक्तप्रसर स्तोत्र-42)

आपके नाम रूप मंत्र का दिन रात जप करनेवाले मनुष्य

तुरंत ही स्वयं बंधनों के भय से मुक्त हो जाते हैं।